विदुर नीति के ज्ञान कमल

महापुरुषों का कथन है कि अज्ञान मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है और ज्ञान सबसे बड़ा मित्र। जीवन में दुःख, पीड़ा, संताप, विपत्ति, अन्याय, अभाव और आलस्य अज्ञान के ही फलक हैं। यदि जीवन में ज्ञान का उदय हो जाए तो ये सारी समस्याएं स्वयं मिटने लगती हैं। इसलिए मनुष्य को अपनी बुद्धि के द्वारा अज्ञान का नाश करने का उपाय करना चाहिए। ज्ञान पुस्तकें पढ़ने अथवा महापुरुषों के उपदेश सुनने मात्र से अवतरित नहीं होता। श्रवण, सत्संग तथा स्वाध्याय ज्ञान अर्जित करने के साधन अवश्य हैं, लेकिन उनके द्वारा प्राप्त ज्ञान को जब तक चिन्तन-मनन द्वारा आत्मसात् नहीं किया जाता तब तक वह ज्ञान अपना फल नहीं दे सकता। ज्ञान जब जीवन में उतरता है तभी उसका वास्तविक लाभ प्राप्त होता है अन्यथा वह ज्ञान बोझ मात्र बनकर रह जाता है। ज्ञान से प्रेम, दया, करुणा, क्षमा, संतोष, धर्म पालन आदि गुणों का विकास होता है। जीवन में इन गुणों के प्रवेश होने पर लोक एवं परलोक दोनों सुधर जाते हैं। विदुरनीति कहती है कि केवल धर्म ही परम कल्याणकारी है, केवल क्षमा ही परम सन्तोष प्रदान करने वाली है तथा केवल अहिंसा ही सुख का मूल है-

एको धर्मः परं श्रेयः क्षमैका शान्तिरुत्तमा।
विधैका परमा तृप्तिरहिंसैका सुखावहा।। (1/57)

महाभारत काल के महान संत, उपदेष्टा, दूरद्रष्टा और नीतिकार महात्मा विदुर ने मनुष्य के जीवन को उत्कृष्ट बनाने, जीवन में सुख-शांति की सरिता बहाने और जीवन को आलोकित करने वाले ज्ञान के ऐसे दीप प्रज्वलित किए हैं जिसके उजाले में चलकर मनुष्य अपने सम्पूर्ण जीवन को प्रकाशमय बना सकता है। जीवन को प्रकाशित कर उसे चमत्कृत करने वाले महात्मा विदुर की महान नीति के अष्टदीप वे ज्ञान कमल हैं जो मनुष्य के अंतस में ही आठ गुणों के रूप में विद्यमान हैं। ज्ञान के उन अष्टदीपों का निरुपण करते हुए विदुरजी कहते हैं -

अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपयन्ति प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रुतं च।
पराक्रमश्चाबहुभाषिता च दानं च यथाशक्ति कृतज्ञता च।।

ये आठ गुण मनुष्य को संसार में प्रदीप्त करते हैं, चमकाते हैं, तेजस्वी बनाते हैं। लोक और परलोक में मनुष्य इन्हीं के द्वारा सुख प्राप्त करता है। आइये! इन गुणों के सम्बन्ध में थोड़ी विस्तार से चर्चा करें।

प्रथम गुण है- **प्रज्ञा** यानी सुबुद्धि। विदुरजी कहते हैं कि मनुष्य को बुद्धिमान होना चाहिए, विचारशील होना चाहिए, सोच समझकर चलना चाहिए और बुद्धि को धर्म से जोड़ना चाहिए। धर्म से जुड़ी बुद्धि व्यक्ति के आत्म कल्याण करने के साथ-साथ समाज तथा सम्पूर्ण जगत का कल्याण करती है। रावण बुद्धिमान तो था, वेदों का ज्ञाता एवं भाष्यकार भी था परन्तु धर्म से जुड़ा हुआ नहीं था। अधर्मयुक्त बुद्धि होने के कारण वह स्वयं तो नष्ट हुआ ही, साथ ही वह अपने परिजनों और देशवासियों को भी ले डूबा। इसलिए बुद्धि को सुबुद्धि के मार्ग पर आरूढ़ करना चाहिए। इस कार्य में धर्म का पालन हमारी सहायता करता है।

द्वितीय ज्ञानदीप है- **कौल्य** यानी कुल के महान संस्कारों का विकास। संस्कारों द्वारा ऐसी भावी पीढ़ी का निर्माण हो, जो शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक रूप से पूर्ण विकसित होकर जीवन की चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना करने में सक्षम हो और एक आदर्श एवं अनुकरणीय जीवन जी सके। साथ ही परिवारों में ऐसे संस्कारक्षम व आनन्दमय वातावरण और ऐसे परिवेश की संचना हो जो परिवारजनों के चारित्रिक, भावात्मक एवं आध्यात्मिक उत्थान व उत्कर्ष में सहायक हो और जिससे परिवार में एवं परिवार के माध्यम से समाज में समरसता, सहकारिता, सहिष्णुता एवं सौहार्द्र की भावना उत्पन्न हो। कौल्य गुण से कुल एवं परिवार का नाम तो होगा ही, साथ ही पितृ ऋण, आचार्य ऋण तथा देव ऋण से भी मुक्ति मिलेगी, जो हमें जन्म के साथ विरासत में मिलते हैं।

अष्टदीपों में तृतीय गुण के रूप में दीप है- **दम**। दम का अर्थ होता है मन की प्रवृत्तियों का दमन करना। मनुष्य का मन इन्द्रियों का दास बनकर विषयों में भटकता रहता है और इस आपाधापी में व्यक्ति अपने जीवन के परम-चरम लक्ष्य को विस्मृत कर देता है। इसलिए विदुरजी ने कहा है कि मनुष्य अपने चंचल मन को वश में रखे, संयमित जीवन व्यतीत करे। संयम कई प्रकार का होता है जैसे आहार में संयम, वाणी का संयम, श्रवण में संयम, व्यवहार में संयम आदि। जब व्यक्ति मन का निरोध व दमन करना सीख जाता है, अपने आपको नियंत्रित कर लेता है तब वह मानव से महामानव बन जाता है। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि मन को वश में करना कठिन अवश्य है पर असम्भव नहीं। इसे वैराग्य एवं अभ्यास के साधनों द्वारा नियन्त्रित किया जा सकता है।

चतुर्थ दीप है- **श्रुतं** यानी शास्त्र ज्ञान का श्रवण। धर्म शास्त्र पढ़ते-पढ़ते तथा महापुरुषों का सत्संग करते-सुनते हुए व्यक्ति के जीवन में चमत्कारिक परिवर्तन हो

जाता है। ऐसा देखा गया है कि किसी बड़े अपराधी को दुनिया की पुलिस नहीं सुधार पाई, राजा या शासक का दंड विधान भी नहीं सुधार पाया लेकिन महापुरुषों की दिव्य वाणी व सत्संग ने उसे एक ही झटके में परिवर्तित कर दिया। कोई एक बात ही व्यक्ति के दिल पर ऐसी चोट कर गई कि पूरा जीवन ही बदल गया। सत्संग व्यक्ति के विवेक को जाग्रत कर देता है जिससे उसे सत्य-असत्य का बोध हो जाता है। इसलिए श्रवण का गुण अतिशय महत्वपूर्ण है। शर्त केवल इतनी है कि हम केवल वही सुनें जो हमारे लिए हितकारी और उपयोगी हो। व्यर्थ की बातें सुनने से कोई लाभ नहीं होगा वरन् अनर्थ होने की संभावना ही रहेगी।

विदुरजी द्वारा निर्देशित पंचम दीप है- **पराक्रम** यानी वीरता। विदुरजी का कथन है कि मनुष्य अपने जीवन की विभिन्न समस्याओं से घबराकर भागे नहीं प्रत्युत उनका वीरता के साथ सामना करे। वह महावीर बने ताकि समस्या समाधान बन जाए। मृत्यलोक में हमें द्वन्द्वों में तो जीना ही पड़ेगा। हम चाहे कितना भी प्रयत्न क्यों न करलें, तब भी सुख-दुख, मान-अपमान, हानि-लाभ, अनुकूलता-प्रतिकूलता तो जीवन में आएगी, उससे बचा नहीं जा सकता। यह तो माया-जगत के अनिवार्य अंग हैं, लेकिन हमें इन द्वन्द्वों का सफलतापूर्वक सामना करने का गुण अपने अन्दर विकसित करना चाहिए अन्यथा जीना दूभर को जाएगा। हम सदैव समता में जीयें- सुख में फूले नहीं और दुख में तड़पे नहीं। यह कला हमें विकसित करनी होगी। वीरता का गुण उन द्वन्द्वों का मुकाबला करने में हमारी मदद करता है।

ज्ञान का षष्ठम् दीप है- **अबहुभाषिता** यानी कम बोलना। महापुरुषों का कथन है कि हम बोलें कम और सुनें अधिक। परमात्मा ने हमें शायद इसीलिए जिह्वा एक दी है और कान दो दिए हैं। जो व्यक्ति केवल आवश्यक होने पर ही नपा-तुला बोलता है, वही समाज में सम्मान पाता है। मौन में अपार शक्ति होती है। अधिक बोलने से ऊर्जा तो अधिक खर्च होती ही है, कई बार मुंह से गलत बात निकल जाने पर अर्थ का अनर्थ भी हो जाता है और लेने के देने पड़ जाते हैं। वर्षो पुराना सम्बन्ध पल भर में धराशायी हो जाता है। कहावत है - **तलवार का घाव भर जाता है लेकिन वाणी का घाव जीवनभर नहीं भरता**। हम अच्छा करें परन्तु उसका गुणगान न करें, अच्छे कार्यो की महिमा दूसरों को करने दें। इसी में महानता है। कहा भी है -

बड़े बड़ाई न करें, बड़े न बोलें बोल।
हीरा मुख से न कहे, लाख हमारो मोल।।

ज्ञान का सप्तम दीप है- **दान**। दान करना ईश्वरीय गुण है। परमात्मा की सृष्टि में पेड़-पौधे, नदी, पर्वत सभी मनुष्य को कुछ न कुछ दे रहे हैं। देव समूह तो देने में ही जुटा हुआ है। सूर्यदेव हमें ऊर्जा और प्रकाश देता है। इन्द्रदेव व वरुणदेव वर्षा करके हमें जल देते हैं, पृथ्वी माता वनस्पति एवं अनेक प्रकार की अन्य वस्तुएं हमारे लिए सुलभ कराती है, वायुदेवता हमें प्राणशक्ति देता है। जो व्यक्ति केवल अपने लिए जीता है, किसी और के उपयोग में नहीं आता है, उस व्यक्ति का जीवन गौण माना जाता है। दान का अर्थ है अभाव की पूर्ति करना, असमर्थ को समर्थ बनाना, दीन-हीन की सहायता करना। इसलिए इसे दिव्य गुण कहा गया है। दान से धन पवित्र होता है। केवल संचय करते रहने से वह अहंकार को ही बढ़ाता है जैसे यदि कुएं का जल न निकाला जाए तो उसमें सडांध आने लगती है। हमें धनादि जो कुछ भी मिला है वह सब परमात्मा की देन है। अतः मनुष्य को उदारतापूर्वक दान देना चाहिए।

विदुरजी द्वारा उपदेशित अष्टम् दीप है- **कृतज्ञता**। कृतज्ञता का अर्थ है दूसरे द्वारा किए गए उपकार को मान्यता प्रदान करना। यदि कोई हमारे लिए थोड़ा सा भी उपकार करता है, हमारे प्रति सद्भावना रखता है, तो हमारा यह कर्तव्य बनता है कि हम उसका उपकार मानें, उसके प्रति सद्भावना रखें, आभार व्यक्त करें। हमें जीवन में हर समय किसी न किसी सहायता की आवश्यकता पड़ती ही रहतीहै। प्रतिभा और क्षमता होने के बावजूद दूसरों के सहयोग के बिना कुछ कर पाना संभव ही नहीं है। काम निकल जाने के बाद पहचानने से इन्कार करना कृतघ्नता है। हमारी सारी भौतिक एवं अभौतिक प्रगति का आधार है पारस्परिक सहयोग और यह सहयोग का वृक्ष तभी बढ़ता है जब हम उसे कृतज्ञता रूपी जल से सींचते हैं। हमें अपने सभी सहयोगियों के प्रति उदारतापूर्वक कृतज्ञता ज्ञापित करनी चाहिए, इसमें कंजूसी के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए। जो व्यक्ति कृतघ्नता का व्यवहार करता है, उसका समाज में तिरस्कार होता है और भविष्य में सहयोग भी नहीं मिलता।

महात्मा विदुरजी का कथन है कि- जो मनुष्य ज्ञान के उपरोक्त अष्टदीपों को प्रदीप्त कर लेता है, उसका जीवन सुखमय और आनन्दमय बन जाता है।

सत्यापन

सत्यापित किया जाता है कि उक्त आलेख मौलिक एवं अप्रकाशित है।

(ताराचन्द आहूजा)

ताराचन्द आहूजा
निदेशक-धार्मिक पुस्तकालय,
4/114, एस.एफ.एस. अग्रवाल फार्म,
मानसरोवर, जयपुर-302020
फोन नं. 0141-2395703